17 दिसम्बर 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 18 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

दिसम्बर (द्वितीय), 2014 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

जनप्रतिनिधियों (राजनेताओं) का अभिनंदन समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 8 दिसम्बर को रात्रि में राजस्थान सरकार के विशिष्ट जनप्रतिनिधियों का अभिनन्दन समारोह सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि श्री कालीचरणजी सर्राफ (उच्च शिक्षामंत्री-राजस्थान सरकार) थे। विशिष्ट अतिथिगण के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अतिरिक्त श्री अशोकजी परनामी (प्रदेश अध्यक्ष-भाजपा, राजस्थान), श्री निर्मलजी नाहटा (महापौर-जयपुर), श्री बनवारीलालजी सिंघल (विधायक-अलवर), श्री मनोजजी भारद्वाज (उपमहापौर-जयपुर), श्री संजयजी जैन (जयपुर शहर अध्यक्ष-भाजपा), श्री अशोकजी गर्ग (पार्षद), श्री महेन्द्रजी अजमेरा (पार्षद), श्रीमती जया जैन (पार्षद), श्रीमती श्वेता शर्मा (पार्षद), पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल आदि विद्वत्गण तथा जस्टिस नरेन्द्रमोहनजी कासलीवाल (अध्यक्ष-महावीरजी), श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी (राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष-महासमिति), श्री सुभाषजी जैन (अध्यक्ष-राजस्थान जैनसभा), श्री नरेशकुमारजी सेठी (अध्यक्ष-महावीर शिक्षा समिति), श्री ज्ञानचंदजी झांझरी (मंत्री-पदमपुरा), श्री बलभद्रजी जैन (अध्यक्ष-चूलगिरि), श्री ताराचंदजी पाटनी (अध्यक्ष-पार्श्वनाथ चैत्यालय), श्री सुरेन्द्रकुमारजी पाण्ड्या, श्री सुरेन्द्रकुमारजी पाटनी, श्री जितेन्द्रजी जैन आदि महानुभाव मंचासीन थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर ने की।

कार्यक्रम का शुभारंभ गायक श्री गौरव सौगानी के मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात् तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में जैनधर्म दर्शन की सुरक्षा के लिए बालकों के मन-मस्तिष्क में जिनवाणी अर्थात् जैनधर्म के सिद्धांतों को उतारने की बात कही। उन्होंने कहा कि संस्कृत व प्राकृत हमारी प्राचीन भाषाएँ हैं, जिनमें मूल ग्रंथों की रचनाएँ हुई है। जिनवाणी को माँ भी कहते हैं। अत: हमें अपनी माँ से सीधे बात करने के लिए दुभाषिये की जरूरत न पड़े इसके लिए संस्कृत एवं प्राकृत जैसी मूल भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन पर बल देना चाहिए, तभी हम प्राचीन संस्कृति को सुरक्षित रख पायेंगे। हमारी संस्था इसी कार्य में पिछले 45 वर्षों से संलग्न है।

डॉ. भारिल्ल के उद्बोधन के उपरान्त मंचासीन सभी अतिथियों का परिचय श्री सुरेन्द्रकुमारजी बज ने दिया। श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी ने अतिथियों का

(शेष पृष्ठ 4 पर ...)

(आगामी कार्यक्रम...)

हार्दिक आमंत्रण : अवश्य पधारें !

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का **तृतीय वार्षिक महोत्सव दिनांक 20 फरवरी से 22 फरवरी 2015 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस त्रिदिवसीय महोत्सव में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक विद्वानों के प्रवचन, प्रौढ कक्षा व गोष्ठियों के माध्यम से अपूर्व लाभ प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त नित्य-नियम पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया जायेगा।

इस मंगल महोत्सव में पधारने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

सम्पादकीय –

सर्वधर्म सम्मेलन की उपयोगिता

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

धर्म और दर्शनों की दृष्टि से भारत में विविधता होते हुए भी भारतीय–राष्ट्रीयता की भावना से सब एक हैं। सभी दार्शनिक एक–दूसरे के धर्म और दर्शनों के बारे में जानना भी चाहते हैं। समय–समय पर होने वाले सर्वधर्म सम्मेलन इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। साम्प्रदायिकता भड़कती है स्वार्थी राजनेताओं द्वारा वोट बटोरने के लिए जातिवाद, वर्गवाद और प्रान्तीयता का विषवमन करने से या फिर धर्मान्धता से, धर्म से नहीं। धर्म तो गेहूँ के साथ घुन की तरह मुफ्त में ही पिसता है, व्यर्थ में ही बदनाम होता है। अत: धर्म में राजनीति को नहीं आने देना चाहिए। राजनीति में धर्म तो रहे, पर धर्म में राजनीति का क्या काम ? पानी में नाव तो रहती है, पर यदि नाव में पानी आ गया तो वह नाव को ले डूबता है। यही स्थिति धर्म की है। यदि धर्म में राजनीति आ गई तो वह धर्म को भी बदनाम कर देती है।

फिर जैनधर्म तो वैसे भी किसी सम्प्रदाय विशेष का नहीं है, जो इसका पालन करता है, यह तो उसी का है, देखो न ! जैनधर्म के प्रतिपादक चौबीसों ही तीर्थंकर जाति से क्षत्रिय थे, इसके विवेचक गौतम गणधर ब्राह्मण थे। उनके अनेक आचार्य भी क्षत्रिय और ब्राह्मण कुल के हुए हैं, पर आज इसके उपासक अधिकांश वणिक हैं।''

विज्ञान तुम्हें पता नहीं ''जयजिनेन्द्र'' शब्द कितना व्यापक है, कितना पवित्र है और कितना समष्टिगत है ? न केवल आदिनाथ से महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकर ही जिनेन्द्र हैं, बल्कि राम, हनुमान भी जिनेन्द्र हैं, इनके अलावा वे असंख्य–अनंत आत्माएँ जिन्होंने मोह–राग–द्वेष–काम–क्रोधादि विकारों पर एवं इन्द्रियों के विषयों पर विजय प्राप्त कर ली है, पूर्ण वीतरागी एवं सर्वज्ञ हो गये हैं, वे सभी जिनेन्द्र हैं। जयजिनेन्द्र में इन्हीं सब पवित्र परमात्माओं की ही जय बोली जाती है, किसी व्यक्ति विशेष की नहीं।

जैनधर्म की मान्यता के अनुसार ''प्रत्येक आत्मा द्रव्यस्वभाव से तो भगवान ही है, अपनी भूल को मिटाकर वह पर्याय में भी परमात्म दशा प्रगट कर सकता है। यह तो विशुद्ध आध्यात्मिक धर्म है, आत्मा से परमात्मा बनने की कला सिखाने वाला धर्म है। इसका सम्पूर्ण व्यवहार भी अध्यात्म का ही साधक है।'' (क्रमश:)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

स्वागत किया तथा टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की गतिविधियों का परिचय ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने दिया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के पदाधिकारियों एवं जयपुर जैन समाज की विभिन्न संस्थाओं से पधारे विशिष्ट पदाधिकारियों द्वारा मंचासीन सभी राजनेताओं का तिलक लगाकर, शॉल, माल्यार्पण, श्रीफल, अंगवस्त्र एवं प्रशस्ति–पत्र भेंटकर सम्मान किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री कालीचरणजी सर्राफ (उच्च शिक्षा मंत्री–राजस्थान सरकार) ने अपने उद्बोधन में कहा कि मैं अपने आपको जन्म से जैन न होते हुए भी कर्म से जैन मानता हूँ। उन्होंने कहा कि मैं जैनधर्म की इस बात से बहुत प्रभावित हूँ कि जैन लोग सिर्फ देना जानते हैं। आप लोग तो अपने पर्वों/त्यौहारों को भी त्याग करके ही मनाते हैं।

श्री अशोकजी परनामी (प्रदेश अध्यक्ष–भाजपा, राजस्थान) ने कहा कि जैनसमाज में समर्पण व त्याग की भावना कूट–कूट कर भरी है। स्वर्णिम जीवन जीने की कला एकमात्र जैनधर्म में ही बताई गई है अर्थात् जो कोई भी जैनधर्म में बताए सिद्धांतों का पालन करेगा, उसका जीवन सफल व स्वर्णिम हुए बिना नहीं रहेगा।

श्री बनवारीलालजी सिंघल (विधायक–अलवर) जो कि राजस्थान विधानसभा में एकमात्र दिगम्बर जैन एम.एल.ए. हैं, ने अपने उद्बोधन में बताया कि मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि मेरा जन्म जैन कुल में हुआ। यहाँ गुरुओं के बीच आकर मुझे ऐसा लगता है कि मैं एक पाठशाला में आ गया हूँ, जिसमें बहुत सी बातें सीखनी है; मैं जैन आचार–विचार को अपने जीवन में उतारने का यथासंभव प्रयास करता हूँ; मेरा अभक्ष्य भक्षण व रात्रि भोजन का आजीवन त्याग है; बाहर जाने का प्रसंग होने पर भी मैं अभक्ष्य भक्षण, रात्रि भोजन नहीं करता। मैं सार्वजनिक क्षेत्र में रहकर भी जैनाचार का पालन कर सकता हूँ, तो और लोग क्यों नहीं ?

श्री निर्मलजी नाहटा (महापौर–जयपुर नगर निगम) ने भी जैन आचार–विचार की प्रशंसा की एवं समाज की सभी समस्याओं का यथासंभव समाधान करने का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम का संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया एवं आभार प्रदर्शन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया। कार्यक्रम में जयपुर जैन समाज के शताधिक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

आगामी कार्यक्रम ...

करणानुयोग शिविर

देवलाली–नासिक (महा.) में दिनांक 1 से 6 मार्च 2015 तक जैनभूगोल, जीवों की अवगाहनादि के साथ पंचपरावर्तन का करणानुयोग शिविर आयोजित किया जा रहा है।

इस अवसर पर डॉ. उज्ज्वला शहा द्वारा कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

आपके आने की पूर्व सूचना देवलाली/मुम्बई ऑफिस में अवश्य दें, ताकि आपकी समुचित व्यवस्था की जा सके। आवास व भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी। सभी साधर्मीजन 'सम्यग्ज्ञानचंद्रिका जीवकाण्ड भाग 1 व 2' तथा 'जैनभूगोल' ग्रंथ अपने साथ लावें। ये शास्त्र देवलाली में सशुल्क उपलब्ध होंगे।

संपर्क सूत्र – वीतराग वाणी प्रकाशक, 157/9, निर्मला निवास, सायन (पूर्व), मुम्बई–400022, फोन – 022–24073581

पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर, लाम रोड, देवलाली, जिला–नासिक, 422401 (महा.), फोन – 0253–2491044

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए - (गतांक से आगे, दूसरी किश्त)

- परमात्मप्रकाश भारिल्ल

गत अंक में हमने पढा - ***सचमुच हम धर्मात्मा नहीं सिर्फ धर्मभीरू हैं, धर्म और धार्मिक आचरण हमारी चाहत नहीं आशा, आकांक्षा, लोभ और भय से प्रेरित मजबूरी है। धर्मात्मा तो दूर हम पुजारी भी नहीं, हम तो सौदागर हैं। सौदागर भी ईमानदार नहीं, बेईमान। ------ हम सभी लोग न तो यह जानते हैं कि धर्म कहते किसे हैं, धर्म क्या है, न हमने यह सोचा है कि हमें क्यों धर्मात्मा होना चाहिए या धर्म किस प्रकार धारण-पालन किया जाये और कौन ऐसा कर सकता है ?*** अब आगे पढिये -

भगवान से अपने कुकर्मों की माफी की यह प्रक्रिया भी बड़ी रोचक है। भगवान के साथ कुछ ले-देकर अपने कुकर्मों के फल से बचने का अवसर दिखाई तो देने लगा पर आखिर किस कीमत पर ?

भगवान किस कीमत पर हमारे कौनसे पाप के फल से हमें मुक्ति दिला सकते हैं या किस कीमत पर कौनसा वरदान उनसे प्राप्त किया जा सकता है, यह कौन तय करे ?

जाहिर है इस सारी प्रक्रिया में भगवान तो कुछ बोलते नहीं, इसलिए जो कुछ भी करना था हमें ही करना था। यह तो हम बहुत अच्छी तरह समझते ही हैं कि ''जैसा काम वैसे दाम'' सो प्रारम्भ में तो हमने काम के अनुसार ही दाम लगाने शुरू किये, बड़ा काम तो बड़ा दाम और छोटा काम तो थोड़े दाम पर धीरे-धीरे हमारी बनिया बुद्धि जागृत होने लगी। यह तो आपको भी अनुभव होगा ही कि यदि कोई ग्राहक बिना मोलभाव किये ही दुकानदार को मुंहमांगी कीमत दे दे तो दुकानदार को इस बात का अफसोस होने लगता है कि उसने मात्र इतनी ही कीमत क्यों माँगी, यदि अधिक मांग ली होती तो वह भी मिल जाती। बस इसी प्रकार जब हमने देखा कि कितने ही बड़े काम की कितनी भी कम कीमत दे दो तब भी भगवान की ओर से कोई प्रतिकार ही नहीं आता, तब हमारी ख्वाहिशें बढती गईं और उनकी कीमत घटती गईं और हम मात्र सवा रूपये के परसाद के बदले भगवान से राजपाट तक मांगने लगे।

ऐसा भी कब तक चलता, जहाँ व्यापार हो वहाँ दलाल न हो यह कैसे संभव है, ये दलाल तो कहीं भी अपने लिये जगह बना ही लेते हैं।

एक ओर तो कुछ लोगों ने देखा कि भगवान के दरबार में तो सबकुछ माटी के मोल लुट रहा है, क्यों न इस बहती गंगा में हम भी अपने हाथ धो लें, इस बंदरबांट में हमें भी कुछ तो मिलना ही चाहिए न !

दूसरी ओर उस याचक की भी एक पीड़ा थी कि वह कोई भी कीमत चुकाने का वायदा करके भगवान से अपना काम करवा लेने का एग्रीमेंट तो कर लेता था पर उसका यह एग्रीमेंट इकतरफा ही बना रहता था, उसे भगवान की ओर से कोई ठोस आश्वासन नहीं मिल पाता था कि आपका काम हो ही जायेगा, इसप्रकार उसकी बेचैनी मिटती नहीं थी, कायम ही रहती थी।

''जहाँ चाह वहाँ राह'' एक मार्ग निकल ही आया।

दाता भगवान और याचक भक्त के बीच एक और वर्ग अवतरित हो गया - विधि-विधान संपन्न करवाने वाले ढोंगी पंडितों और लोभी पुजारियों का।

अब पंडितजी कार्य विशेष की सिद्धि के लिए भगवान की ओर से विशेष कीमत मांगने लगे और बदले में निश्चित ही कार्यसिद्धि का आश्वासन देने लगे, इसप्रकार दोनों का ही काम हो गया, पंडितजी को अपना हिस्सा मिल गया और भक्तों को पक्का आश्वासन। इतना ही नहीं, पहिले न तो कोई याचकों की शंकाओं का समाधान करने वाला था और न ही उनके शिकवे-शिकायतों को दूर करने वाला। यदि मन्नतें मांगने और अनुष्ठान कर लेने के बावजूद प्रयोजन सिद्धि न होती तो याचक किससे अपनी व्यथा कहता ? पर अब वह पंडितजी से जवाब-तलब कर सकता था। ढोंगी पंडितजी ने अपना यह कर्तव्य बखूबी निभाया भी।

जब कोई पंडितजी से शिकायत करता कि आपके कहे अनुसार सब कुछ तो कर लिया पर कष्ट तो दूर हुआ ही नहीं तब वे यह कहकर उसका मुंह बन्द कर देते कि कष्ट दूर नहीं हुआ तो क्या हुआ पर कष्ट बढा भी तो नहीं न! कष्ट का बढना तो रुक गया न !

इस पर जब सहमते-झिझकते हुए याचक कहता है कि रुका भी नहीं, संकट तो बढा ही है तब भी पंडितजी कहाँ हार मानने वाले थे, वे कहते हैं कि यह तो इस अनुष्ठान का ही परिणाम है कि तू मात्र इतने से संकट से निपट गया अन्यथा तो तू किस भयंकर विपत्ति में पड़ने वाला था इसकी तुझे कल्पना ही नहीं है।

इसप्रकार आप पायेंगे कि ढोंगी पंडितजी ने यदि आपके द्वारा भगवान के प्रति समर्पित राशि में से अपना हिस्सा प्राप्त किया है तो उन्होंने उसके बदले भगवान की ओर से अपना कर्तव्य भी बखूबी निभाया है। अन्यथा आप ही बतलाइये कि आखिर भक्तों के सामने भगवान की ओर से पैरवी कौन करता ? भगवान स्वयं तो अपने मुख से कुछ बोलते नहीं हैं।

प्रारम्भ में काम की कीमत भी काम के अनुसार बड़ी भारी हुआ करती थी पर कालान्तर में इस धंधे को फलता-फूलता देखकर यहाँ भी भीड़ बढने लगी काम की कीमत काम के महत्व के आधार पर नहीं वरन याचक का मुंह और पॉकेट देखकर तय होने लगी, कम्पिटीशन बढ जाने पर लोग कम से कम कीमत पर अधिक से अधिक दिलाने का वायदा करने लगे और आज हालत यहाँ तक आ पहुँची है कि गली-गली में भिखारी भी भगवान के एजेन्ट बनकर मात्र एक पैसे के बदले भगवान से 10 लाख दिलाने का वायदा करते फिर रहे हैं।**(क्रमशः)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

1 से 7 जनवरी 2015	नागपुर (महा.)	पंचकल्याणक
20 से 22 जनवरी	हेरले-कोल्हापुर	वेदी प्रतिष्ठा
23 से 25 जनवरी	दीवानगंज,भोपाल	वेदी प्रतिष्ठा
15 फरवरी 2015	हस्तिनापुर	शिलान्यास
20 से 22 फर.2015	जयपुर (राज.)	वार्षिकोत्सव
1 से 6 अप्रैल 2015	विदिशा (म.प्र.)	पंचकल्याणक
17 से 23 मई 2015	पारले (मुम्बई)	पंचकल्याणक
24 मई से 10 जून 2015	मेरठ	प्रशिक्षण-शिविर

17 दिसम्बर 2014, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. PC / FN-32 / 2012-14

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्‌गार –

भारतवर्षीय विद्वत्परिषद् के मन्त्री **श्री पन्नालालजी साहित्याचार्य,** सागर ने लिखा है –

''श्री कानजीस्वामी युगपुरुष हैं, उन्होंने दिगम्बर जैन धर्म के प्रभाव का महान कार्य किया है। उनके इस जीवन-निर्माण में समयसार का अद्‌भुत प्रभाव है। इसमें निबद्ध कुन्दकुन्द स्वामी की विशुद्ध अध्यात्म देशना ने अगणित प्राणियों का उपकार किया है। उसने पहले महाकवि श्री बनारसीदासजी को दिगम्बर धर्म में दीक्षित किया। फिर शतावधानी श्री राजचन्द्र को दिगम्बर जैनधर्म का श्रद्धालु बनाया और अब श्री कानजीस्वामी को दिगम्बर धर्म का दृढ श्रद्धानी बनाया है। न केवल कानजीस्वामी को, किन्तु उनके साथ 20 हजार व्यक्तियों को भी इस धर्म में दीक्षित कराया है। समयसार से प्रभावित होकर श्री कानजीस्वामी ने शुद्ध वस्तुस्वरूप को समझा, वर्षों इसका एकांत में मनन किया और अन्तरंग की प्रबल प्रेरणा पाकर अपने जन्मजात धर्म का परिधान छोड़ दिया। अब वे बड़े गौरव के साथ कहते हैं –

संसार सागर से पार करने वाला यदि कोई धर्म है तो दिगम्बर जैनधर्म ही है। उनके इस कार्य से सौराष्ट्र प्रान्त ही जागृत हुआ हो सो बात नहीं, भारतवर्ष के समस्त प्रदेश जागृत हुए हैं और स्वाध्याय के प्रति निष्ठा का भाव उत्पन्न कर आत्मकल्याण की ओर लग रहे हैं।''

डॉ.दरबारीलालजी कोठिया, अध्यक्ष, अखिल भा.दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् ने गुरुदेव के प्रति निम्न हार्दिक भाव अभिव्यक्त किये हैं –

''श्री कानजीस्वामी ने दिगम्बर समाज में तत्त्वज्ञान की दिशा में निश्चय ही जागरण किया है।

समयसार एक ऐसा ग्रन्थरत्न है, जिसकी ओर आत्मगवेषी मुमुक्षु का ध्यान जाना स्वाभाविक है। स्वामीजी इस समयसार से प्रभावित होकर दिगम्बर परम्परा में आये और उन्होंने समयसार के अध्ययन, मनन व चिन्तन और सतत् स्वाध्याय पर बल दिया।''

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

निबंध भेजें

ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' की प्रेरणा से युवाओं को धर्म से जोड़ने के उद्देश्य से राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता में देशभर से निबंध आमंत्रित हैं –

विषय – युवा धर्म से विमुख : कारण और निवारण

पुरस्कार – प्रथम (11000/- रु.), द्वितीय (7100/-रु.), तृतीय (5100/- रु.), 11 सांत्वना (1100/- रु.)।

निबंध भेजने का पता– जीवन शिल्प इंटर कॉलेज बानपुर, जिला- ललितपुर - 284402 (उ.प्र.); **संपर्क सूत्र–** विकास जैन (09453661666), संजय सिद्धार्थी (07509824330)

नोट :– (1) निबंध शब्द सीमा 2000 शब्द। (2) भाषा शुद्ध, स्पष्ट, मौलिक। (3) निबंध 15 मार्च 2015 तक उक्त पते पर अवश्य भेजें। (4) निबंध में कांट-छांट व एक दूसरे से कॉपी मिलती न हो। (5) निर्णायक मंडल का निर्णय सर्वमान्य होगा। (6) निबंध के साथ अपना पता, मोबा.नं. एवं पासपोर्ट साईज फोटो अवश्य भेजें।

पदाधिकारी नियुक्त

दिगम्बर जैन पंचायत समिति ललितपुर के विगत दिनों सम्पन्न चुनाव में इंजी.अंचल जैन अध्यक्ष, प्रदीपकुमार जैन संयोजक, डॉ.अक्षय टडैया महामंत्री, श्रीमती मीना इमलया वरिष्ठ उपाध्यक्ष, नीरज जैन मुल्लन महावीर जयंती संयोजक एवं अन्य पदाधिकारी चुने गये।

शोक समाचार

मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) निवासी श्री महेन्द्रकुमारजी जैन शीरेवालों का स्वर्गवास दिनांक 18 अक्टूबर को शांतपरिणामोंपूर्वक हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 2100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

प्रकाशन तिथि : 13 दिसम्बर 2014

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा,** एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए रेनबो ऑफसेट प्रिण्टर्स, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127